स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा–प्रथम खण्ड

(द्वितीय पत्र– प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

घनानंद

– डॉ. मुन्ना साह

घनानंद मध्यकालीन काव्यधारा के रीतिमुक्त कवि हैं। घनानंद एकमात्र ऐसे कवि हैं जो प्रेम के लौकिक और आध्यात्मिक, दोनों पक्षों की व्याख्या करते हैं और उनमें से किसी को भी छोटा नहीं मानते। सौंदर्य और रचनाविस्तार की दृष्टि से देखा जाए तो घनानंद महाकवियों में गिने जाने योग्य कवि हैं। उनकी स्पष्ट धारणा है कि मनुष्य की प्रेमानुभूति ईश्वरीय प्रेम की गरिमा से किसी तरह भी हल्की नहीं है। घनानंद ने सुजान से प्रेम करने के पश्चात् अपनी प्रेमानुभूति अभिव्यक्त की तथा भक्ति मार्ग में दीक्षित होने के पश्चात् राधा–कृष्ण के प्रति आस्था प्रकट की। राधा–कृष्ण के प्रेमस्वरूप का चित्रण करते हुए बिना किसी संकोच के घनानंद कहते हैं कि इस संसार में स्त्री–परुष का प्रेम वही है, और कुछ नहीं –

"प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै बिचार
आपुरो हहरि वार ही तैं फिरि आयौ है।
ताही एकरस ह्वै बिबस अवगाहैं दोउ
नेही हरि–राधा जिन्हैं देखे सरसायौ है।
ताकी कोऊ तरल तरंग–संग छूट्यौ कन
पूरि लोक लोकनि उमगि उफनायौ है।
सोई घनआनंद–सूजान लागि हेत होत
ऐसें मथि मन पै सरूप ठहरायौ है।।"(घनानंद का काव्य– रामदेव शुक्ल)

घनानंद बहुत अनुभव के बाद इन पंक्तियों के माध्यम से कहते हैं कि 'प्रेम एक सागर है जिसके ओर–छोर का पता नहीं। उसकी थाह लेने को आतुर विचार बेचारा घबराकर इसी किनारे से लौट आता है। उसी समुद्र में राधा और कृष्ण निरंतर केलि करते हैं। इस युगल को अपनी लहरों पर झुलाकर वह सागर उमंगता रहता है। उसी अपार सागर की एक बूंद छिटक गई है जिसने तीनों लोकों को आप्लावित कर दिया है।' इससे स्पष्ट होता है कि घनानंद की प्रेम परिकल्पना में कोई गोपनभाव या अस्पष्टता नहीं है।

घनानंद जिस सुजान से असीम प्रेम करते थे, उसकी उदासीन भावना के संदर्भ में लिखते हैं कि –

'जीवनि–मूरति जान सुनौ गति, जौ जिय रावरो प्यार न पावतौ।

संगम–रंग अनंग–उमंगनि–झूमि न आनंद अंबूद छावतौ।

लाड़िलौ जोबन त्यौं अधरासव चोपनि लोभी मनै नहिं भावतौ।

तौ उर–दाहक प्राननि गाहक रूखे भए को परेखो न आवतौ।।'

(घनानंद का काव्य– रामदेव शुक्ल)

अर्थात् प्रिय के रूखा हो जाने की कचोट होने का कारण सार्थक है। क्योंकि संगम का वह रंग, अनंग की वे तरंगें, उनका झूम झूमकर आनंद की वर्षा करनेवाले बादलों के रूप में छा जाना, वह लाड़ला जोबन, अधरों की वह मादक मदिरा, यह सब भुलाए नहीं भूलता। यह सब न मिला होता तो दुख किस बात का रहता।

जीवन में सुख के क्षण बहुत छोटे होते हैं और दुःख की घड़ियां बहुत लंबी। घनानंद के साथ भी यही हुआ सुजान का साथ बहुत कम समय के लिए मिला। कवि के जीवन में वियोग की घड़िया बहुत लंबी थी। वियोग को प्रेम की जाग्रत गति इसलिए भी कहा गया है कि उस दशा में भोक्ता की अपेक्षा रचनाकार के सक्रिय रहने की संभावना अधिक रहती है।

वस्तुतः घनानंद स्वयं भोक्ता रूप में प्रेम वेदना को अभिव्यक्त करने वाले कवि हैं। संयोग के क्षण कितने सुखद होते हैं, कि उस समय तन–मन में बारहों महीने बसंत ही रहता है– 'सोभित सुजान घनानंद सुहाग सींच्यौ। तेरे तन–मन सदा बसंत बसंत है।' घनानंद जब भक्ति भावना से ओतप्रोत हो जाते हैं तो उनकी भावना गोपाल कृष्ण के गुणों के प्रति भावविभोर हो जाती है और वे उसी में उलझ जाते हैं,– रसना गुपाल के गुन उरझी। बहुत भांति छलछन्द–बन्द बकवाद–फंद ते सुरझी।

———————————— • • • ————————————